हिंदी साहित्य और दलित,नारी, आदिवासी,किन्नर एवंम नव विमर्श

डॉ. सुलभा उल्हास पाटील

सहयोगी प्राध्यापक.

गोखले एज्युकेशन सोसायटीचे शिक्षणशास्त्र महाविद्यालय,संगमनेर.

अकोले बायपास रोड.

मु.पो.संगमनेर-४२२६०५ . जिल्हा अहमदनगर.

Abstract-{ सारांश } सार –

साहित्य में समाज, संस्कृति,सामाजिकता,ऐतिहासिकता, राजकीय संदर्भ और मानवीय मूल्योंका नाश या विकास कभी स्पष्टतासे या अस्पष्टता से ध्वनित होता है. "हिंदी भाषा के वाचिक और लिखित [शास्त्रसमूह] को साहित्य कह सकते है." विमर्श का अर्थ है, "बातचीत,विचार, विवेचन परीक्षण,समीक्षा,तर्क आदि." ऐसा साहित्य जिसमें स्त्री जीवन की अनेक समस्याओं का चित्रण ही स्त्री-विमर्श कहलाता है. प्रस्थापित लिंगभेदाधिष्ठित पुरुषकेन्द्री दृष्टिकोनोंके खिलाफ जो वाद है,वही नारीवाद है. ***स्त्रीवादी संगठन और स्त्री विमर्श इनका विकास परस्पर सहयोग से ही हुआ है. मेरी इलमन की 'थिंकिंग अबाउट वुमन' {1968} और केट मिलेट की 'सेक्सुअल पोलिटिक्स' {१९७०} ये किताबें स्त्रीवादी विमर्श के पायाभूत ग्रंथ माने जाते हैं. एलेन शोवाल्टरने पहली बार "स्त्री विमर्श" इस संकल्पना का प्रयोग किया.*** *नारी नव विमर्श वर्तमान मानवतावादी चेतना को महत्व देता है. नारी विमर्श का इतिहास सांस्कृतिक वर्चस्व के खिलाफ हुए संघर्षों के लम्बे इतिहास का एक बडा अध्याय है. हिंदी साहित्य जगत में* ***स्त्री-विमर्श की शुरुआत छायावाद काल से माना जाता है****. हिंदी साहित्य जगत में नारी नव विमर्श कई धाराओमें विकसित होता हुआ दिखाई देता है.*

प्रमुख संकल्पनाएँ या कार्यात्मक परिभाषाएं *- हिन्दी साहित्य,नारी, नारी विमर्श, नव विमर्श.*

प्रस्तावना -

साहित्य समाज का दर्पण होता है. समाज में जो घटित होता है,उसका वास्तव नहीं भी हो तो व्यक्तिगत या समूह अनुभूतियोंका वर्णन ही काल्पनिक, मनोवैज्ञानिक, सांस्कृतिक आदि स्तरों की अभिव्यक्तिमेंे किया जाता हैं.अतित या वर्तमान में क्रोर्य, शोषण, अन्याय, हिंसा, दमन, पीड़ा, दया, सहानुभूति, कर्मकांड..... आदि का प्रतिबिम्ब हमें साहित्य की विविध विधाओंमे दिखाई देता हैं.मानव जीवन का इतिहास तथा संस्कृति,संघर्ष,समन्वय आदि अनेक प्रकार की जटिलताओं से भरा हुआ हैं.और स्वाभाविक रूप में इसीका चित्रण साहित्यिक ढंग से किया जाता है.जिसमें समाज, संस्कृति,सामाजिकता,ऐतिहासिकता, राजकीय संदर्भ और मानवीय मूल्योंका नाश या विकास कभी स्पष्टतासे या अस्पष्टता से ध्वनित होता है.अर्थात साहित्य यह विषय 'विमर्शी चिंतन' का विषय है. मूलतः मनोरंजन के साथ -साथ वर्तमान जीवन की यथार्थता को उद्घाटित करना और मानव विमुक्ति की दिशा में, हर मानव को व्यक्तिगत और समूह स्तर पर आनंद, सुख,और शांति की दिशा में अग्रेसर होने के लिए बाध्य करना यही साहित्य की प्रेरणा तथा उद्देश्य होता हैं.निम्नलिखित मद्दों के आधारपर यह बातें अधिक स्पष्ट हो सकती है -

1. *साहित्य का अवकाश व्यापक होता है. इस कारण वह समग्र मानव जीवनव्यवहार व्याप्त कर सकता है.इतनाही नहीं तो साहित्य निर्माण में व्यस्त मन स्थल-काल की सीमारेखाएँ पार करते हुए कभी-कभी नयी मूल्यप्रणाली, मूल्यव्यवस्था का अविष्कार करती है.
2. *साहित्य निर्माण सिर्फ एक व्यक्ति से संबंधित होते हुए भी, मूलतः साहित्य कृति यह सामाजिक होने के लिए ही होती है. इसीलिए सात्र नि:संदिग्ध शब्दोमें कहते हैं-"Literary phenomenon is fundamentally social."
3. *कलाकृती में बद्ध किया हुआ आशय किसी निर्वात अवकाश से नहीं आता है तो समाज की अनेकानेक जटिल घटना-प्रसंगों से आकारबद्ध होता है.इसीलिए "Literature is a criticism of the society," ऐसा कहा जाता है.
4. *साहित्यिक तथा साहित्यिक कृति इनपर जिस प्रकार से समाज का प्रभाव दिखाई देता है, उसी प्रकार साहित्यका समाजपर पडनेवाला प्रभाव भी दिखाई देता है. इस संदर्भ में रेने वेलेक और ऑस्टिन वॉरन ये लेखकद्वय लिखते है, "लेखकपर समाज का प्रभाव पडता है, उसी प्रकार लेखक का भी समाजपर प्रभाव पडता है. कला जीवन की सिर्फ नकल ही नहीं करती, बल्की उसे रुप भी प्राप्त कर देती है. कल्पित कथात्मक साहित्य की नायकनायिकाओकी तरह अपने जीवन को आकार देनेवाले लोग भी हो सकते है."

उपर्युक्त विवेचन के आधारपर हिन्दी साहित्य में नारी नव विमर्श की चर्चा करना सयुक्तिक रहेगा.

'मानव जाति' या यों कहें की, 'मानव प्राणी' इसके अंतर्गत दो भेद किये जाते हैं - पहला, लिंग के आधारपर, नर और नारी. दूसरा भेद वर्ण के आधारपर. दुसरे भेद के अंतर्गत दलित, आदिवासी किन्नर आते हैं. विषय व्याप्ति बढ़ने के भय से प्रस्तुत लेख में हम 'नारी' को लेकर ही विमर्श करेंगे. अर्थात - "हिंदी साहित्य, नारी एवंम नव विमर्श'.

उद्देश्य - नारी विमर्श के अनुरोध हेतू समाज में नारी के स्थान की पार्श्वभूमि को चित्रित करना.

१- नारी विमर्श के अनुरोध हेतू समाज में नारी के स्थान की को चित्रित करना.

२- हिंदी साहित्य में चित्रित नारी विमर्श का संक्षेप में चित्रण करना -संशोधन शीर्षक के संबंध में कार्यात्मक परिभाषाएं -

१- हिन्दी साहित्य - देश के हिंदी भाषा के उन सभी गद्य और पद्य ग्रंथो, लेखों आदि का समूह और सम्मिलित राशी, जिसमें स्थायी,उच्च और गूढ विषयों का सुंदर रूप से विवेचन हुआ हो.

"हिंदी भाषा के वाचिक और लिखित [शास्त्रसमूह] को साहित्य कह सकते है."

मराठी विश्वकोष-साहित्य -

"मानवी जीवनव्यवहार विषयक चित्रण,विवरण,अर्थनिर्णयन, भाष्य इस स्वरूप के भाषिक अभिव्यक्तिको स्थूल रूप से 'साहित्य' ऐसे संबोधा जाता है. जीवनव्यवहार के भावनिक,अध्यात्मिक,बौद्धिक ऐसे विविध अंगों से किया हुआ, सर्जनशील,वैचारिक,कल्पनात्मक, वास्तव ऐसे भिन्न-भिन्न स्तरों पर का सर्वांगीन, सम्यक दर्शन साहित्यसे वाचकों को प्रतीत होता है. 'Littera' इस मूल लॅटिन शब्द से 'लिटरेचर' इस शब्द का निर्माण हुआ है.

२-विमर्श - का अर्थ है, "बातचीत,विचार, विवेचन परीक्षण,समीक्षा,तर्क आदि."

दुसरे शब्दों में कहा जाये तो, जब व्यक्ति किसी समूह में किसी विषय पर चिंतन अथवा चर्चा-परिचर्चा आदि करता है तो उसे विमर्श कहा

जाता है. या जब कोई व्यक्ति किसी विषय को लेकर अकेले में गहन चिंतन,मनन करके किसी समूह में जाकर उस विषय पर अन्य व्यक्तियोंसे तर्क-वितर्क करता है तो उसे विमर्श कहते है.

२- नारी- विमर्श- पश्चिमी देशोंसे आयातित एक संकल्पना [सामान्य विचार] है. इंग्लंड और अमेरिका में उन्नीसवीं शताब्दी में फेमिनिस्ट मूव्हमेंट से इसकी शुरुआत हुई. यह आंदोलन लैंगिक समानता के साथ-साथ समाज में बराबरी के हक के लिए एक संघर्ष था, जो राजनीती से होते हुए साहित्य, कला एवम् संस्कृति तक आ पहुंचा, आखिरी में यह आंदोलन विश्व के कई देशोंसे होता हुआ भारत तक पहुंचा.

यह सामाजिक परिवर्तन का माध्यम है.यह विमर्श केवल स्त्री ही नहीं,बल्की समूची मानवजाति की स्वतंत्रता का पक्षधर है.नारी विमर्श यह मुख्यत: समाजशास्त्रीय दृष्टिकोन है.**मेरी वुलस्टोनक्राफ्ट इस लेखिका का 'The Vindication of Rights of Woman'[1792] ये फ्रेंच राजक्रान्ति के परिप्रेक्ष में स्त्री हक्कों का समर्थन करनेवाली ये किताब स्त्रीवादका प्रारंभ बिंदू माना जाता है.**संक्षेप में कहा जाये तो मतदान प्राप्ति के हक्क के संगठन के कारण स्त्रियों का भी संगठन हुआ,और जीवन के अन्य सभी स्तरपर के हक्कों के लिए स्त्री जागृत हो गयी. 'पुरुष प्रधान पितृसत्ताक समाज यह स्त्री शोषण का मुख्य कारण है, यह निर्विवाद तत्व स्वीकार किया गया.' ***"इस पारंपारिक लिंगभावात्मक शोषक व्यवस्था के खिलाफ संघर्ष करते हुए स्त्री को मानव मानते हुए प्रतिष्ठा,अधिकार तथा निर्णय प्रक्रिया में उचित स्थान प्राप्ति के लिये जो कोशिश शुरु हुई उसे ही 'नारीवाद' के नाम से पहचाना जाता है."*** स्त्री विषयक दृढ संकल्पनाएँ `उसमे स्थित मनुष्यता की भावना को अधोरेखित न करते हुए केवल स्त्री के वस्तुगत मूल्य को मद्देनजर रखते हुए उसे केवल एक वस्तू मानते हुए उसके साथ व्यवहार किया जाता है. इस प्रकार प्रस्थापित लिंगभेदाधिष्ठित पुरुषकेन्द्री दृष्टिकोनोंके खिलाफ जो वाद है,वही नारीवाद है. ***स्त्रीवादी संगठन और स्त्री विमर्श इनका विकास परस्पर सहयोग से ही हुआ है. मेरी इलमन की 'थिंकिंग अबाउट वुमन' {1968} और केट मिलेट की 'सेक्सुअल पोलिटिक्स' {१९७०} ये किताबें स्त्रीवादी विमर्श के पायाभूत ग्रंथ माने जाते हैं. एलेन शोवाल्टरने पहली बार "स्त्री विमर्श" इस संकल्पना का प्रयोग किया. उसीका*** **"The Feminist Criticism in Wilderness : A Critical Inquairy.{1981}** ***यह ग्रंथ भी स्त्री विमर्श पद्धति स्पष्ट करनेवाला प्रमुख ग्रंथ है.फ्रेंच विदुषी सिमाँन द बोव्हा का*** **"The Second Sex"{1949}** ***यह ग्रंथ भी बहुत चर्चित हुआ.*****".....one is not born but becomes a woman."** ***इस विचार को प्रस्थापित करने में सिमाँन द बोव्हा का बहुत ही महत्व है. इस दरम्यान युनो ने १९७५ यह साल 'महिला वर्ष' घोषित किया.यह स्त्रीवाद का राजकिय विजय था.***

हिन्दी साहित्य में नारी नव विमर्श -मॅगी हॅम इन्होने स्त्रीवादी विमर्श के तीन मूलभूत गृहितकों को स्पष्ट किया है-

१- साहित्य के माध्यम से लिंग संकल्पना प्रतिकात्मक रूप से सांस्कृतिक तथा वैचारिक स्तरपर प्रकट होती है.

२- स्त्री तथा पुरुषों के लेखन में भिन्नता होती है,और वह लिंगभेद के कारण होती है.

३- प्रस्थापित विमर्श पुरुष प्रधान होता है,और उसीके आधारपर स्त्री साहित्य विमर्श या समीक्षा की जाती है.

उपर्युक्त गृहितकोंके आधारपर प्रस्थापित साहित्य का विमर्श होता था.**एलेन शोवाल्टर के मत**

से यह प्रस्थापित विमर्श अन्डोसेन्ट्रिक याने पुरुषी अनुभवोंपर आधारित है, जिसको नारी विश्व को सुचारू रूप से,यथार्थता से प्रतिबिम्बित करना नहीं आता.इसी कारण आधुनिक काल में और स्त्रीवादी साहित्य में नव विमर्श के आधारपर निर्माण होता रहा है...वे नव विमर्श निम्नानुसार -

१-नारी नव विमर्श साहित्य की ओर अभिनव मानवतावादी दृष्टि से देखता है.

२-स्त्री का सर्वांगीण संपूर्ण तथा पूर्वग्रहरहित आकलन करते हुए उसका साहित्यिक चित्रण से संबंध जुडाते हुए कार्यकारणभाव को स्पष्ट करना.

३-समाजशास्त्रीय विमर्श तथा स्त्री विमर्श ये दोनों संकल्पनाए परस्परपूरक है.क्योंकि साहित्य और समाज दोनों का परिपूर्णता से आकलन कर देनेवाला समाजशास्त्रीय विमर्श स्त्रीवाद को पूर्ण रूप से अपने में समाकर ले सकता है.

४- नारी नव विमर्श वर्तमान मानवतावादी चेतना को महत्व देता है.जैसे-भारत के एक सुप्रसिध इतिहासतज्ञ विदुषी रोमिला थापर इन्होने अपने 'महाभारत'और 'अभिज्ञान शाकुंतलम' इनके तुलनात्मक अभ्यास में स्पष्ट किया है की,"महाभारत की शकुंतला के व्यक्तित्व में आत्मविश्वास है,महत्वाकांक्षा है.....लेकिन कालिदास के नाटक में वह सहमी हुई,सहनशील, भयभीत और राजा के सामने आतंकित भी है.आज हम कालिदास की शकुंतला को अधिक महत्व देते है.परंपरा के इस चुनाव में हमारी वर्तमान की चेतना काम करती है."

उपर्युक्त नव विमर्श हिन्दी साहित्य में जो प्रस्तुत है, उनके कुछ उदाहरण निम्नानुसार- हिंदी साहित्य जगत में **स्त्री-विमर्श की शुरुआत छायावाद काल से माना जाता है**.महादेवी वर्मा की कविताओं में वेदना का विभिन्न रूप देखने को मिलता है.जिस में नारी-जागरण एवंम मुक्ति के सवाल को उठाया गया है.ऐसा साहित्य जिस में स्त्री जीवन की अनेक समस्याओं का चित्रण ही स्त्री-विमर्श कहलाता है. हिंदी साहित्य जगत में नारी नव विमर्श कई धाराओमें विकसित होता हुआ दिखाई देता है. यौन शुचिता, स्त्री देह की स्वतंत्रता,पुरुषवादी सौंदर्यबोध की कसौटी, पितृसत्तात्मक समाज इन सबके आधारपर अलग अलग लेखकों की अपनी अपनी अलग अलग धारणाएँ दिखाई देती है.जैसे- विमल मित्र लिखित **"साहब बीबी और गुलाम", "सुरसतिया"** इनमे भारतीय समाज में महिला की स्थिति, पुरुष का वर्चस्व और एक विद्रोही महिला के चरित्र को रोचक ढंग से चित्रित किया है. उसी प्रकार **विष्णू प्रभाकरजी ने अपने "कोई तो"** ईस उपन्यास में जाति -पाति और धर्म की समस्या,विवाह,तलाक,बलात्कार की समस्या,नारी शोषण,उत्पीडन .....आदि के मुक्ति के लिए "कोई तो" की प्रतीक्षा नहीं है, यह परिणामकारक ढंग से प्रतिपादन किया है.उसी प्रकार **मैथिलीशरण गुप्तजी की काव्यधारा** को अगर हम जाने तो संताप,उद्वेग,विडंबना,अन्याय आदि को झेलती हुई नारी के कितने रूप स्वाभाविक ढंग से उपजे हुए दिखाई देते है,जैसे-

"नारीपर विश्वास न करनेवाला पुरुष-
अधिकारों के दुरुपयोग,
कौन कहाँ अधिकारी.
कुछ भी सत्व नहीं रखती क्या,अर्धांगिनी तुम्हारी."

"यशोधरा"{मैथिलीशरण गुप्त} में नायिका अपने प्रिय की शिकायत करते हुए कहती है,

"सखि वे मुझसे कहकर जाते.
सिद्धि हेतु स्वामी गए यह गौरव की बात.
पर चोरी-चोरी गए यही बडी व्याघात."

स्त्रीपर अधिकार जमानेवाला, पर किसी भी जीवन निर्णय में उसको स्वीकार न करनेवाला नर....उनकी ही ये पंक्तियाँ-

"अबला जीवन हाय तुम्हारी यही कहानी.
आँचल में दुध है और आंखों में पानी."

वास्तविक में ये पंक्तियाँ समाज ने नारी के प्रति की हुई विडंबना को उपरोध के साथ स्पष्ट करती है.लेकिन यहाँ के धर्म-संस्कृति के रक्षकों ने इसे गौरव की भावना के साथ जोडकर एक तमाचा ही नारीजगत को लगाया है.

संत मीरा का दु:ख पूरा संसार जानता है.**महादेवी वर्माजी को तो "आधुनिक युग की मीरा" ही कहा जाता है.नारीजगत की व्यथा को स्पष्ट करने के लिए बस उनकी एकही काव्यपंक्ति काफी है-**

"मैं नीर भरी दुख की बदली."

अमृतलाल नागरजी लिखित "नाच्यौ बहुत गोपाल"की नायिका कहती है,"आजादी-सुतंत्रता का वरण ही उत्तम है.मैने तो नसीब की मार से मेहतरानी बनके ये सीखा बाबूजी कि दुनिया में दो पुराने-से-पुराने गुलाम है-एक भंगी और दूसरी औरत.जब तक ये गुलाम हैं आपकी आजादी रुपये में पूरे सौ के सौ नये पैसे भर झूठी है."

प्रेमचंद से लेकर आज तक अनेक पुरुष लेखकों ने स्त्री समस्या को अपना विषय बनाया लेकिन उस रूप में नहीं लिखा जिस रुप में महिला लेखिकाओं ने लिखी है.**हिन्दी साहित्य में स्त्री विमर्श लिए उषा प्रियवंदा,कृष्णा सोबती, मन्नू भंडारी और शिवानी ये चार नाम अधिक मशहूर है.इन्होने नारी मन के छिपे शक्तियों को पहचाना और नारी की दिशाहीनता, दुविधाग्रस्तता, कुंठा आदि का विश्लेषण किया.**हिंदी कथा लेखिकाओं ने अपने-अपने लेखन में नारी मन की अनेक समस्याओं को लेखन विषय बनाया है. अमृता प्रीतम की निम्न पंक्तियाँ नारी जगत के बारे में बहुत कुछ कह जाती है-

"कोख के अंधेरे से लेकर कब्र के अंधेरे तक ले जानेवाला यह तय किया गया रास्ता." स्वातन्त्र्योत्तर हिन्दी गद्यकार एवं कवि रघुवीर सहायजी ने नारी को बेचारी कहकर अपने काव्य में उसकी दयनीय दशा का वर्णन किया है. लेकिन अब आठवें दशक तक आते आते महिला लेखिकाओं की बाढ सी आ गयी है. ममता कालिया - बेघर, मृदुला गर्ग-कठ गुलाब, मैत्रेयी पुष्पा -चाक एवं अल्मा कबूतरी, प्रभा खेतान- छिन्नमस्ता, पद्मा सचदेव- अब न बनेगी देहरी, मेहरुन्निसा परवेज- अकेला पलाश, शशि प्रभा शास्त्री- सीढियां, कुसुम आंचल- अपनी-अपनी यात्रा आदि में नारी संघर्ष को देखा जा सकता है.

संक्षेप में -

- हिन्दी में स्त्री विमर्श मात्र पूर्वग्रहों या व्यक्तिगत विश्वासों तक ही सीमित नहीं है. उसके और भी कुछ आयाम है.
- अलग-अलग समय और उनमें होनेवाले परिवर्तनों को भी ध्यान में लेना जरुरी है.
- छठे शताब्दी के पहले तक सिर्फ पुरुष लेखकों का अधिकार था.
- साठ के दशक और उसके संघर्ष का अधिकांश इतिहास जागरूक होती हुई स्त्री का अपना इतिहास है.
- नारी विमर्श का इतिहास सांस्कृतिक वर्चस्व के खिलाफ हुए संघर्षों के लम्बे इतिहास का एक बडा अध्याय है.

उपसंहार -

पूरे विश्व में नर और नारी समाज के दो प्रमुख हिस्से है.दोनों एक दुसरे के बिना अधुरे हैं. दोनों सकारात्मक दृष्टि से मिल जायें तो एक नितांत सुंदर,सुखमय सृष्टि का निर्माण हो सकता है.इस

एकरुपता का प्रतिक है, 'अर्धनारीनटेश्वर'. जो एक नर-नारी एकता का सौंदर्यशील प्रतीक है, विकास तथा प्रगति का एक मानचिन्ह ! सौंदर्य और शक्ति, सृजनता तथा संवर्धन,सहजता और निर्धार इनका सुंदर मिलाप !! नर-नारी एकदुसरे के सहयोग से सृष्टि क्रम को नितांत सुंदर ढंग से, सुचारु रूप से निरंतर आगे बढाते हुए, नीजि विकास और व्यक्तित्व को संपन्न करते हुए यह जीवन यात्रा परिपूर्ण करते हुए एक परिपूर्ण विरामबिंदू की ओर चल सकते है.....,यह तो केवल एक स्वाभाविक घटना है, जो वास्तव जीवन में इसी तरह से ही होनी चाहिए .लेकिन खेद की बात है कि ऐसा नहीं हुआ है. नारी जीवन का इतिहास अपमान, वंचना,शोषण,अन्याय-अत्याचार और गुलामी का ही इतिहास है.केवल हिन्दी साहित्य ही क्यों, पूरे विश्व का इतिहास और साहित्य देखिए - अपमान, वंचना,शोषण,अन्याय-अत्याचार और गुलामी और पुरुषसत्ताक के खिलाफ संघर्ष की जंग ही है,स्त्री-विमर्श. नारी की इस मुक्ति के सिवा मानव मुक्ति असंभव है.

संदर्भ -

1- आधुनिककालीन हिंदी साहित्य का इतिहास /दलित विमर्श hi.mi.wikibooks.org
2- आधुनिककालीन हिंदी साहित्य का इतिहास/स्त्री विमर्श hi.mi.wikibooks.org
3- हिंदी साहित्य की समकालीन चिंताओं पर विमर्श https://www.jagran.com/uttar-pradesh/gorakhpur-city-11188299.html
4- समकालीन अस्मितामुलक विमर्श-Course onlinecourse.swayam2.ac.in/cec19-lg01/preview
5- हिन्दी साहित्य में नारी विमर्श तथा इसकी महत्ता - Ignited Minds Journals. http://ignited.in
6- श्यामसुंदर मिरजकर {डॉ.}संत नामदेव समाजशास्त्रीय अभ्यास,२०१६ प्रथमावृत्ती, नाग-नालंदा प्रकाशन,विशालनगर,मु.पो.इस्लामपूर,सांगली.
7- विभा रानी श्रीवास्तव, Progyan-vigan,Sunday, April 7,2013. Progyan-vigan.blospot.com, 'नारी विमर्श के अर्थ' का निहितार्थ भाग-२.
8- Hi.mi.wikipedia.org.
9- Vishwakosh.marathi.gov.in
10- Shabdkosh.raftar.in
11- ३८८.सुरसतिया -विमल मित्र svnlibrary.blogspot.com
12- Ardhnaarishwar by Visnu Prabhakar
13- https://www.goodreads.com/book/show/25393884